काव्य उत्सव . साहित्य अकादमी व एलबीएसएम का संयुक्त आयोजन

माटी, किसान, पर्यावरण और स्त्री-प्रश्नों से रूबरू हुए श्रोता

लाइफ रिपोर्टर @जमशेदपुर

एक दिन एक शेर आया/ जंगल से नहीं.. शेर आया पंचायत ऑफिस से/ शेर आयी डीटीओ ऑफिस से/ शेर आया संसद भवन से, / सब डर गया.. बोला शेर आया / उसको नमस्कार करो,/जोहार करो/ उसको प्रणाम करो.. शेर दहाड़ उठा , जवाब में बोला ...म्याऊ .. यह पंक्ति है राजा पुनियानी की कविता की. जिन्होंने नेपाली भाषा में अपनी कविता को श्रोताओं के समक्ष रखा. मौका था साहित्य अकादमी एवं एलबीएसएम कॉलेज द्वारा आयोजित बहुभाषीय पूर्वी क्षेत्रीय कविता उत्सव का. जिसका आगाज शनिवार को एलबीएसएम कॉलेज करनडीह के प्रेक्षागृह में हुआ.

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि कोल्हान विश्वविद्यालय(केयू) के कुलपति गंगाधर पंडा, विशिष्ट अतिथि केयू के कुलसचिव जयंत शेखर व साहित्य अकादमी के पूर्वी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक अशोक अविचल, साहित्य अकादमी बांग्ला भाषा परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार व अन्य अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश उपस्थित रहे. कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया. दूसरे चरण में कविता पाठ सत्र का शुभारंभ हुआ जहां 18 भाषाओं के कवियों ने काव्य पाठ किया.इस सत्र का संचालन अध्यक्ष मदन मोहन सोरेन ने किया. मौके पर प्रख्यात कथाकार जयनंदन को सम्मानित किया गया. उद्घाटन सत्र का संचालन प्रो. विनय कुमार गुप्ता और डॉ. संचिता भुईसेन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मौसूमी पॉल ने किया. मौके पर कुसुम ठाकुर, विमल झा, एचपी शुक्ला, डॉ. अमर सिंह, एलसी दास, गणेश ठाकुर समेत शहर के कई साहित्यकार व विद्यार्थी मौजूद थे.

एलबीएसएम कॉलेज में शनिवार को काव्य उत्सव का उद्घाटन करते मुख्य अतिथि कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ गंगाधर पंडा व अन्य अतिथि.

उठल डेग के जब डगर रोक ले, तोप-तलवार के नजर रोक ले

कविता उत्सव के तीसरे सत्र के अध्यक्ष प्रो. मित्रेश्वर अग्निमित्र ने कहा कि इस आयोजन के जरिये झारखंड में सांस्कृतिक इतिहास का एक पन्ना लिखा जा रहा है. इस सत्र में संध्या सिन्हा ने कांठी तथा भगजोगनी के खिड़की शीर्षक कविताओं का पाठ किया. उनकी कविताएं स्त्री-प्रश्न से संबंधित थे. सुभाषचंद्र महतो ने कुरमाली भाषा की अपनी कविताओं को सुनाया. कुड़ुख भाषा की कवयित्री गीता कोया 'सिनगी देई' और 'तेंगा बा तेंगा' के माध्यम से आदिवासियों के गौरवगाथा कही. प्रो. लक्ष्मणचंद ने 'इहे सांच हे' और 'बेटी के विदागरी गीत'को गाकर पूरे माहौल को बेहद भावपूर्ण बना दिया- उठल डेग के जब डगर रोक ले/ तोप-तलवार के नजर रोक ले/ मत मान पर इहे सांच हे-/ याद जेकर जी जहर घोल दे. बोध मुंडा की मुंडारी भाषा की रचनाओं में आदिवासी जनजीवन के सौंदर्य और श्रमिक जीवन की कठिनाइयों को व्यक्त किया. भुजंग टुडू ने संताली कविताओं में मानव सभ्यता और इतिहास की शाश्वत चिंताओं के प्रति श्रोताओं को संवेदित किया. उर्दू के शायर प्रो. अहमद बद्र ने गजल छूने वाले के हाथ जलते हैं, चाहे अपनी हो या परायी आग... से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया. तीसरे संत्र का संचालन प्रो. विजय प्रकाश ने किया.

कवि होना भी दुर्लभ है : भगवान जगन्नाथ पर संस्कृत की एक 'अष्टपदी' सुनाते हुए केयू के वीसी गंगाधर पंडा ने कहा कि 'संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेना दुर्लभ है और मनुष्य जन्म लेकर कवि होना और भी दुर्लभ है. कविता का करुणा से गहरा संबंध है. केयू के कुलसचिव जयंत शेखर ने कहा कि आजादी के 75 साल बाद झारखंड में साहित्य अकादमी का आयोजन होना सौभाग्य की बात है. दूसरे सत्र में संताली के साहित्यकार मदन मोहन सोरेन की अध्यक्षता में उत्तम कुमार बरदलै, कमल चक्रवर्ती, रश्मि चौधुरी, बसुधारा राय, शिव कुमार टिल्लू, एमए हाशिम, राजा पुनियानी, सौभाग्यवंत राणा, के डोबरो बुडीउली ने अलग-अलग भाषों में काव्य पाठ किया.